VOLUME - 2

ISSN 2349-638x
IMPACT FACTOR 7.367

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha, Kolhapur's

Smt. Akkatai Ramgonda Patil Kanya Mahavidyalaya, Ichalkaranji

Tal-Hatkanangale, Dist- Kolhapur, Maharashtra- 416115
Affiliated to Shivaji University, Kolhapur
Reaccredited by NAAC with 'B+ Grade (2.57 CGPA)

ONE DAY NATIONAL MULTILINGUAL SEMINAR

on

'Socio-Cultural Context in 21st Century English, Hindi and Marathi Literature'

Saturday, 30th September, 2023

ORGANISED BY

Departments of Marathi, Hindi, English and IQAC

Chief Editor
Dr. Pramod P. Tandale

Executive Editor
Prof. (Dr.) Trishala Kadam

Editors
Prof. (Dr.) Subhash Jadhav (Marathi)
Mr. Sudhakar Indi (Hindi)
Mr. Dipak Sarnobat (English)
Minaj Naikawadi

Scanned by CamScanner

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

Peer Reviewed And Indexed Journal
ISSN 2349-638x
Impact Factor 7.367
Website :- www.aiirjournal.com

Theme of Special Issue

Socio-Cultural Context in 21st Century English, Hindi and Marathi Literature

(Special Issue No.128)

Chief Editor

Dr. Pramod P. Tandale

Executive Editor

Prof. (Dr.) Trishala Kadam

Editors

Prof. (Dr.) Subhash Jadhav (Marathi)
Mr. Sudhakar Indi (Hindi)
Mr. Dipak Sarnobat (English)
Minaj Naikawadi

Scanned by CamScanner

No part of this Special Issue shall be copied, reproduced or transmitted in any form or any means, such as Printed material, CD – DVD / Audio / Video Cassettes or Electronic / Mechanical, including photo, copying, recording or by any information storage and retrieval system, at any portal, website etc.; Without prior permission.

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal

ISSN 2349-638x

Special Issue No.128

Sept. 2023

Disclaimer

Research papers published in this Special Issue are the intellectual contribution done by the authors. Authors are solely responsible for their published work in this special Issue and the Editor of this special Issue are not responsible in any form.

Section Editors:

1) Dr. Vitthal Naik (Hindi)

2) Mrs. Rameshwari Kudale (English)

3) Mr. Sandip Patil (English)

4) Mrs. Sunita Powar (English)

5) Dr. Priyanka Kumbhar (Marathi)

6) Mrs. Pratibha Pailwan (Marathi)

Scanned by CamScanner

Sr.No.	Author Name	Research Paper / Article Name	Page No.
56	डॉ. अनिता एस. कर्पूर	'जिन्दगीनामा' उपन्यास में सांस्कृतिक परिदृश्य	188
57	डॉ. आरिफ शौकत महात	आदिवासी समाज जीवन में व्यक्त चेतना के विविध आयाम (आदिवासी कविता के संदर्भ में)	192
58	डॉ. विनोद श्रीराम जाधव	21 वी सदी के उपन्यासों में सामाजिक व सांस्कृतिक चेतना	200
59	डॉ.माधव राजप्पा मुंडकर	'शकुंतिका' उपन्यास का सामाजिक परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन	205
60	डॉ. प्रवीणकुमार न. चौगुले	इक्कीसवीं सदी के हिंदी काव्य में सामाजिक परिदृश्य	209
61	प्रा. संपतराव सदाशिव जाधव	'मैं भी औरत हूँ' में समाज की संकुचित मानसिकता का भय	216
62	डॉ. हेमलता काटे	चंद्रकांता के उपन्यासों में चित्रित सांस्कृतिक बोध	220
63	डॉ. रूपा चारी	ज़ीरो रोड : एक दास्तान	224
64	डॉ. दीपक रामा तुपे	'नयी सदी के स्वर' का सामाजिक परिदृश्य	228
65	डॉ. निशाराणी महादेव देसाई	21वी सदीं की हिन्दी कविता में चित्रित बदलते सामाजिक, सांस्कृतिक संदर्भ	232
66	डॉ.महादेवी गुरव	21वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में सामाजिक और सांस्कृतिक परिदृश्य	235
67	अनिता संजय चिखलीकर	नासिरा शर्मा की कहानियों में नारी विमर्श	238
68	डॉ.अंजली उबाळे	अप्रवासी हिंदी उपन्यासों में सांस्कृतिक परिदृश्य	242
69	डॉ.भिकाजी व्हन्नाप्पा कांबळे	इक्कीसवीं सदी के हिंदी ग़ज़ल साहित्य में सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य	246
70	सुरज विठ्ठल डूरे	21 वीं सदी के असगर वजाहत के नाटकों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य	251
71	अरुण विठ्ठल कांबळे	इक्किसवीं सदी के हिंदी काव्य में आदिवासी सामाजिक परिदृश्य	254
72	प्रमोद गणपती कांबळे	डॉ.जयप्रकाश कर्दम जी के 'तलाश' कहानी संग्रह में सामाजिक, विषमता का यथार्थ चित्रण	258

Scanned by CamScanner

'नयी सदी के स्वर' का सामाजिक परिदृश्य

डॉ. दीपक रामा तुपे
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर
(अधिकारप्रदत्त स्वायत्त)
ई-मेल: dipaktupe1980@gmail.com

सारांश:

वस्तुतः साहित्य सामाजिक स्थितियों का दस्तावेज होता है। समाज की अच्छाई-बुराई यानी सुख-दुःख की सही अभिव्यक्ति साहित्य के माध्यम से ही होती है। हीरालाल मिश्र द्वारा संपादित 'नयी सदी के स्वर' कविता संग्रह इसी स्थिति का का प्रमाण देता है। 'नयी सदी के स्वर' कविता संग्रह विभिन्न सामाजिक स्वर, विचार और संवेदनाओं का लेखा-जोखा प्रस्तुत करता है। वर्तमान युग की विभिन्न सामाजिक समस्याओं के साथ-साथ समसामयिक संदर्भों को भी प्रस्तुत काव्य-संग्रह में रेखांकित किया गया है। 'नयी सदी के स्वर' की कविताएँ बाजारवाद, महँगाई, सामाजिक विषमता, सांस्कृतिक ऱ्हास, पर्यावरण ऱ्हास, पारिवारिक टूटन, पारिवारिक कलह, पारिवारिक असंतोष, शोषण, अन्याय-अत्याचार, स्वार्थांधता, धर्मांधता, अवसरवादिता, अनैतिकता, दिखावटीपन, षड्यंत्रकारी राजनीति, सत्तालोलुपता आदि सामाजिक स्वरों को मुकरित करती है। प्रस्तुत कविता संग्रह सामाजिक यथार्थ के विभिन्न पहलुओं को पूरे सिद्दत के साथ रेखांकित करता है।

की-वर्ड: पारिवारिक टूटन, असंतोष, कन्या भ्रूण हत्या, महँगाई, लूटपाट, चोरी, नारी शोषण।

प्रस्तावना:

हीरालाल मिश्र संपादित 'नयी सदी के स्वर' की कविताएँ समसामयिक युग का प्रतिनिधित्व करती है। नयी सदी की कविताएँ मानव जीवन के विभिन्न रंग-रुप और स्वरों का चिंतन करती हुई नजर आती है। इन कविताओं में अभिव्यक्त अनैतिकता, धर्मांधता, स्वार्थांधता, आक्रमकता, बेधकता, उदासीनता, निर्धनता, बेईमानी, महँगाई, अंधविश्वास, शोषण, अन्याय-अत्याचार, लुटपाट, झूठापन, कन्या भ्रूण हत्या, भूखमरी, असंतोष, विभाजन नीति, चोरी जैसी सामाजिक समस्याओं का लेखाजोखा प्रस्तुत करती है और पाठकों को सोच-विचार करने के लिए मजबूर कर देती है। इतना ही नहीं; ये कविताएँ समग्र सामाजिक स्थितियों का दस्तावेज प्रस्तुत करती है। नए विचार, नई जीवन शैली के साथ-साथ विश्वबंधुत्व और मानवीय मूल्यों की हिफाजत ये कविताएँ करती हुई नजर आती है। कहना आवश्यक नहीं कि नए सदी के स्वर की कविताएँ युगीन चेतना, युगीन स्वर, युगीन विचार, युगीन संवेदना का यथार्थपरक चिंतन प्रस्तुत करती नजर आती है।

'नयी सदी के स्वर' की कविताएँ मानव जीवन में व्याप्त गीत-अगीत के बीच जूझती, विद्रोह करती, आक्रमक होती, सीधे मुठभेड करती नजर आती है; जैसे-

"असंतोष है, व्यथा घनी है।
घर-घर में अब तनातनी है।"[1]

नंदलाल पाठक की उक्त पंक्तियों में पारिवारिक असंतोष, व्यथा और ताण-तनाव व्यक्त होता है। इससे न केवल पाठक की ही संवेदना जागृत होती बल्कि पारिवारिक कलह, असंतोष अनुभूत होता रहता है। वस्तुतः घाटो ने लहरों से और गांवों ने शहरों से पूछा कि हम यूं ही जिये जा रहे हैं; अच्छे दिन कब आयेंगे? असल में यह सवाल कवि सरकार से करता है जिन्होंने अच्छे दिन लाने वादा किया था। महँगाई और भूखमरी के अग्निकुंड में निर्धन झुलस रहा है। सूरज ने सरकारी धूप-छाँव को बाँट दिया है। इतना ही नहीं; कुलगुरु भी रागदरबारी गा रहे हैं। इसलिए शायर ने गजल से पूछा और कीचड ने कमल से पूछा हम यूँ ही जिये जा रहे हैं अच्छे दिन कब आयेंगे? कवि कमला प्रसाद जख्मी लिखित 'अच्छे दिन कब आएँगे' कविता इन्हीं स्थितियों का प्रमाण देती है-

"घाटो ने लहरों से पूछा-गांवों ने शहरों से पूछा,

Scanned by CamScanner

हम यूँ ही जिये जायेंगे-अच्छे दिन कब आयेंगे।।
सूरज ने बाँटा टुकडों में,
धूप छाँव सरकारी।
कुल गुरु भी गा रहे अब
शुद्ध राग-दरबारी।
महँगाई - भूख की अग्नि में
निर्धन ही झुलसे जायेंगे।
शायर ने गजल से पूछा, कीचड ने कमल से पूछा,
हम यूँ ही जिये जायेंगे-अच्छे दिन कब आयेंगे।"[2]

उपरोक्त कथन से स्पष्ट होने में देर नहीं लगती कि भूख और महंगाई की अग्नि में निर्धन जनता झुलस रही है। इस बात की चिंता न कमल को है, न सरकार को। और न उन्हें है जिन्होंने अच्छे दिन लाने का वादा किया था। आज की नारी का शील, संकोच और सपनों का घरौंदा खुलेआम रौंदा जा रहा है। वह फुटपाथ पर पैदा होती है और फुटपाथ पर ही पली-बडी-जवान होती है। कभी वह नेता-अभिनेता की शिकार होती है तो कभी वह साहूकार-थानेदार की शिकार होती है तो कभी वह दबंगों-लफंगों की शिकार होती है। वह सबकी चेरी बनकर रह जाती है। इसका प्रमाण सूर्य नारायन गुप्त 'सूर्य' की 'नारी की व्यथा-कथा' कविता में मिलता है-

"वह-
फुटपाथ पर
पैदा हुई
फुटपाथ पर ही-
पली/बडी/जवान हुई
जवान होते ही-
कभी साहूकार/कभी थानेदार
कभी नेता/कभी अभिनेता
कभी दबंगों की/कभी लफंगों की
चेरी बन कर रह गई
फुटबाल की तरह लोगों ने उसे रौंदा
उजड़ता चला गया-
उसके शील/संकोच/सपनों का घरौंदा।"[3]

स्पष्ट है कि फुटपाथ पर पैदा हुई नारी जवान होते ही उसका शील, संकोच और सपने दबंगों, लफंगों, साहूकार, थानेदार, नेता, अभिनेता द्वारा खुलेआम रौंदे जा रहे हैं। वह एक फुटबाल बनकर रह जाती है। आज मानव-रचित एक ऐसी प्रणाली है जो अपनी जड को कुतर रही है। आज गर्भ में भ्रूण परीक्षण-लिंग परीक्षण कर कन्या की हत्या कर दी जाती है और बेटा है तो उस भ्रूण की हत्या नहीं की जाती। परिणामस्वरुप डॉक्टर मालामाल हो रहे है, मगर मातृशक्ति ही घट रही है। राम शंकर सिंह की 'बेटी बचाओ' कविता में इसी स्थिति का जिक्र मिलता है। स्वयं कवि के शब्दों में-

"अब गर्भ में भ्रूण परीक्षण में ही, लिंग परीक्षण हो जाता,
बेटी जो रही तो मार दिये, बेटा जो रहा तो रह जाता,
भरपूर कमाई डॉक्टर की, पर मातृ शक्ति तो घट ही रही है,
मनव-रचित विधान प्रणाली, अपनी जड को कुतर रही है।"[4]

स्पष्ट है कि आज कन्या को भ्रूण में ही मार दिया जाता है। परिणामतः लडकों के अनुपात में लडकियों की संख्या दिन-ब-दिन कम होती जा रही है। हालाँकि लडकियाँ देश की आन-बान और शान होती है। किरन बेदी, इंदिरा गांधी, सानिया मिर्जा

Scanned by CamScanner

जैसी बेटियों ने देश का नाम रोशन किया है। लेकिन खेद की बात यह है कि गर्भ में ही बेटियाँ को बलि दिया जा रहा है। संध्या श्रीवास्तव की 'बेटियाँ' कविता में इन्हीं स्थितियों का जिक्र मिलता है। देश का सम्मान बढाने वाली इन बेटियों को कवि गर्भ में बलि न देने की गुहार लगाता है-

"देखो किरन बेदी को मेरे
ये शान मेरी बेटियाँ
मैं कर रही हूँ गर्व तुम पर
हैं आन मेरी बेटियाँ
इंदिरा और सानिया
ये भी हैं मेरी बेटियाँ।।
कैसे बढायें आज मेरी
शान मेरी बेटियाँ
क्यूं गर्भ में ही हो रहीं
बलिदान मेरी बेटियाँ?"[5]

उपरोक्त कथन से स्पष्ट होने में देर नहीं लगती कि बेटियाँ देश का सम्मान बढाती है। समाज के सुंदर सीपियों की है ये बेटिया। हर दम देश का नाम रोशन करने वाली बेटियों की आरती उतारनी चाहिए लेकिन खेद की बात यह कि उन्हें गर्भ ही मार दिया जाता है। वर्तमान लोकतंत्र में राजा और प्रजा की सांठगांठ नजर आती है। राजा और प्रजा दोनों चोरी करते हैं और अपनी-अपनी काली करनी को गोरी कहते रहते है। इसके लिए देश में कोई ऐसी नीति बनाई जानी चाहिए ताकि ऐसे जहर से देश बच जाए। अन्यथा अपनी चोरी यानी काली करनी को गोरी करनी कहने वाले देश का पतन किए बिना नहीं रहेंगे। महेंद्रनाथ तिवारी 'अलंकार' 'गीत' कविता में इसी स्थिति का प्रणाम देते हैं- "यहाँ पे राजा और प्रजा दोनों चोरी करते हैं।

अपनी-अपनी काली करनी को गोरी कहते हैं।
कैसे बचे जहर से देश, ऐसी नीति बने कोई।।"[6]

स्पष्ट है कि इस देश में राजा और प्रजा दोनों मितवा है और मितवा बनकर देश को लूट रहे है। यहाँ न्याय राजा और प्रजा के लिए समान होना चाहिए और सच पर आधारित होना चाहिए। मगर आज के न्यायालय यातानालय बन गए है। कवि सूर्य नारायन गुप्त 'सूर्य' लिखित 'हाइकु' के माध्यम से सवाल उठा रहा है कि यह कैसी आजादी है? फसादी खुलेआम शरीफों को लूटे जा रहे हैं। स्वयं कवि के शब्दों में-

"ये न्यायालय
सच के लिये तो है
यातनालय।
कैसी आजादी
शरीफों के घरों को
लूटें फसादी।"[7]

ISSN 2349-638X
www.allrjournal.com

कहना आवश्यक नहीं कि आज शरीफों को फसादी दिनदहाडे लुटे जा रहे हैं। परिणामी न्याय की देवता यातनालय की देवता बनी हुई नजर आती है। आज सबको 'देश-देश' खेलने का बुखार चढा हुआ है। इस खेल-खेल में हाथ किसी ने तो पाँव किसी ने काट दिए हैं। न इस देश में सच लिखिने की आजादी है और न सच कहने की। कवि जय चक्रवर्ती लिखित 'रामराज्य आ गया देश में' कविता में इसी स्थिति का प्रमाण मिलता है-

"सच कहने की-सच लिखने की
सहमी-सहमी है आजादी,
अपने-अपने देश सभी के,
सबने-

Scanned by CamScanner

हिस्से बाँट लिए हैं
खेल-खेल में हाथ किसी ने
पाँव किसी ने
काट दिये हैं
'आओ देश-देश खेलें' का सबको चढा बुखार मियादी।"[8]

स्पष्ट है कि आज देश में सबको बँटवारे का बुखार चढा हुआ है। हर राज्य, हर जिला, हर धर्म, हर जाति, हर वर्ग और मनुष्य-मनुष्य बँटता जा रहा है। परिणामी इस देश में सबने मिलकर अपने-अपने हिस्से का देश बाँट दिया है जिसके कारण देश में लिखने और बोलने की आजादी भी शेष नहीं रही है।

निष्कर्षतः

कहा जा सकता है कि 'नयी सदी की स्वर' की कविताएँ समाज के विविध रंग-रुपों का चिंतन करती हुई नजर आती है। ये कविताएँ समाज के गीत-अगीत, विद्रोह, पारिवारिक कलह, आक्रमकता, असंतोष, कथा-व्यथा और तान-तणाव को अभिव्यक्त करती है। ये कविताएँ यह भी सवाल उठाती है कि जिन्होंने अच्छे दिन लाने का वादा किया था वह कब पूरा होगा? आज महँगाई, भूखमरी की अग्नि में निर्धन जनता झुलस रही है। इस बात की किसी को भी चिंता नहीं हैं। नारी के शील और सपनों को खुलेआम तार-तार कर दिया जाता है। नारी नेता-अभिनेता, साहूकार-थानेदार, दबंगों-लफंगों की शिकार होती नजर आ रही है। वर्तमान में मानव-रचित एक ऐसी प्रणाली विकसित हो रही है जो गर्भ में भ्रूण का परीक्षण कर कन्या की हत्या कर देती है। परिणामी बेटियों की संख्या दिन-ब-दिन कम होती जा रही है और डॉक्टरों का धंधा भी खूब फल-फूल रहा है। दरअसल बेटियाँ देश की आन-बान और शान होती है। इसका सशक्त उदाहरण किरन बेदी, इंदिरा गांधी, सानिया मिर्जा आदि बेटियाँ हैं, मगर आज ऐसी बेटियों को गर्भ में मार दिया जा रहा है। आज लोकतंत्र में राजा और प्रजा की सांठगांठ नजर आ रही है; जो खुलेआम चोरी करते हैं और अपनी-अपनी काली करनी को गोरी कहते हैं। आज चुनौती है ऐसी जहरिली नीति से देश को कैसे बचाया जाए? क्योंकि यहाँ के राजा और प्रजा दोनों मितवा है। आज के न्यायालय यातानालय बने हुए है। सवाल है कि यह कैसी आजादी है? जहाँ फसादी खुलेआम शरीफों को लूट रहा है। आज 'देश-देश' खेलने का बुखार हर किसी को चढा हुआ है। इस खेल-खेल में सबने मिलकर देश को बाँट दिया है जिसके कारण देश में आजादी न के बराबर है जो आने वाले काल में खतरे की घंटी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. हीरालाल मिश्र - नयी सदी के स्वर, नंदलाल पाठक, नारायण प्रकाशन, 121, विद्या विहार कालोनी, परिवार ब्रेड, फैक्टरी के सामने, मडौली भुल्लापुर, वाराणसी-221108, पृ. 26
2. वही, पृ. 432
3. वही, पृ. 303
4. वही, पृ. 439
5. वही, पृ. 454
6. वही, पृ. 388
7. वही, पृ. 300
8. वही, पृ. 428

ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com

Scanned by CamScanner